परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

कक्षा - आठ विषय - संस्कृत

पाठ - कण्टकेनैव कण्टकम्

मौड्यूल - 1

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना. अ. (हिन्दी व संस्कृत)

लिखितरूप

लोककथाओं में जीवन की रंग बिरंगी तस्वीर मिलती है। दिलचस्प बात यह है कि लोककथाएँ किसी एक भाषा या इलाके तक सीमित नहीं रहतीं। उन्हें कहने वाले जगह-2 घूमते हैं, इसलिए रूप और वर्णन में हेर-फेर के साथ ये लोक कथाएँ दूसरी जगहों पर भी मिल जाती हैं। क्षेत्र विशेष की संस्कृति उनको अनूठा बनाती है। स्थान व काल के अनुसार लोक कथाओं की नई-नई व्याख्या होती रहती है, इस क्रम में उनमें परिवर्तन भी होता है।

परधान मुख्यत: गौड़ राजाओं की वंशावली और कथाओं के गायक थे। गौड़ राज्य के समाप्त होने पर ये गायक अपनी गाए जाने वाली कथाओं पर चित्र बनाने लगे। इस समुदाय की कथाओं व चित्रकलाओं के बारे में और अधिक जानने हेतु "जनगढ़ कलम" पुस्तक देखी जा सकती है।

मध्य प्रदेश के डिण्डोरी जिले में परधानों के मध्य अनेक लोक कथाएँ प्रचलित हैं। प्रस्तुत कथा के संकलन कर्ता हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री उदयन वाजपेयी हैं।

यह कथा विष्णुशर्मा द्वारा लिखित 'पञ्चतंत्र' की शैली में लिखी गई है। इस कथा में यह बताया गया है कि संकट में

पड़ने पर भी चतुराई और प्रत्युत्पन्नमतित्व (हाजिर जवाबी) से उस संकट से निकला जा सकता है।

पाठ सार

बच्चो आज हम अध्ययन करेंगे पाठ पाँच का जिसका नाम है "कण्ट्केनैव कण्टकम्" अर्थात कण्ट्केन एव कण्ट्कम् । इसका अर्थ है काँटे से ही काँटा निकलता है ।

कोई चंचल नाम का शिकारी था। एक बार उसने वन में जाल बिछाया, उस जाल में एक बाघ फँस गया। बाघ की प्रार्थना पर शिकारी ने उस बाघ को जाल से बाहर निकाल दिया। बाघ ने शिकारी से पानी माँगा। पानी पीकर बाघ ने शिकारी से कहा कि मैं भूखा हूँ अब मैं तुम्हें खाऊँगा । बाघ की कृतघ्नता से हताश शिकारी नदी के जल के पास गया, नदी का जल कहने लगा कि यह लोक अत्यधिक स्वार्थी है। लोग जल पीते हैं और मुझे ही गंदा करते हैं। उसकी बात का समर्थन करते हुए पेड़ भी कहने लगा कि लोग मेरी छाया में बैठते हैं, मेरे फल खाते हैं और मुझे ही काटते हैं।

तब शिकारी ने अपनी कथा एक लोमड़ी को सुनाई, लोमड़ी ने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय देते हुए बाघ को पुन: जाल में फँसा दिया। इस प्रकार लोमड़ी की बुद्धिमानी से शिकारी के प्राण बच गये।

मूलपाठ:

आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविका निर्वाहयति स्म। एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रात:काले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत्।

शब्दार्थ:

कश्चित् - कोई। व्याधः - शिकारी, बहेलिया।

ग्रहणेन - पकड़ने से। स्वीयाम् - स्वयं की।

निर्वाहयति स्म - चलाता था। विस्तीर्य - फैलाकर।

आगतवान् - आ गया। विस्तारिते - फैलाए गए (में)।

दौर्भाग्यात् - दुर्भाग्य से। बद्धः - बँधा हुआ।

सरलार्थः

कोई चंचल नामक शिकारी था। वह पक्षियों और पशुओं को पकड़कर अपना गुजारा करता था। एक बार वह जंगल में जाल फैलाकर घर आ गया। अगले दिन सुबह जब चंचल वन में गया तब उसने देखा कि उसके द्वारा फैलाए गए जाल में दुर्भाग्य से एक बाघ फँसा था।

मूलपाठः

सोऽचिन्तयत्, 'व्याघ्रः मां खादिष्यति अतएव पलायनं करणीयम्।' व्याघ्रः न्यवेदयत्-'भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।' तदा सः व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। व्याघ्रः क्लान्तः आसीत्। सोऽवदत्, 'भो मानव! पिपासुः अहम्। नद्याः जलमानीय मम पिपासां शमय।

शब्दार्थः

पलायनम् - भाग जाना।

न्यवेदयत् - निवेदन किया।

कल्याणम् - सुख/हित।

मोचयिष्यसि - मुक्त करोगे

हनिष्यामि - मारूंगा।

निरसारयत् - निकाला।

क्लान्तः - थका हुआ। पिपासुः - प्यासा।

जलमानीय - पानी को लाकर। पिपासां - प्यास।

शमय - शान्त करो/मिटाओ।

सरलार्थः

उसने सोचा, 'बाघ मुझे खा जाएगा, इसलिए भाग जाना चाहिए।' बाघ ने प्रार्थना की-हे मनुष्य! तुम्हारा कल्याण हो। यदि तुम मुझे छुड़ाओगे तो मैं तुमको नहीं मारूंगा।' तब उस शिकारी ने बाघ को जाल से बाहर निकाल दिया। बाघ थका हुआ था। वह बोला, 'अरे मनुष्य! मैं प्यासा हूँ। नदी से जल लाकर मेरी प्यास शान्त करो (बुझाओ)।'

अभ्यासः

प्रश्न: 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तर लिखिए-)

(क) व्याधस्य नाम किम् आसीत्?

उत्तरम् - चंचलः |

(ख) चञ्चलः व्याघ्रं कुत्र दृष्टवान्?

उत्तरम् - वने(जाले) |

प्रश्नः2.पूर्ण वाक्येन उत्तरत-(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए-)

(क) चञ्चलेन वने किं कृतम्?

उत्तरम् - चंचलेन वने जालं विस्तारितम्।

प्रश्नः 3. रेखांकित पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणम् - (रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न का निर्माण कीजिए)

(क) व्याधः व्याघ्र <u>जालात्</u> बहिः निरसारयत्।

उत्तरम् - व्याधः व्याघ्र कस्मात् बहिः निरसारयत् ?

इति